इलाज ही बीमार

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार

गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087

ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020

ISBN : 978-93-88781-21-3

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक

तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

ILAAJ HI BEEMAR (POETRY) Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,
हर उस जीव,
नदिया व शजर को
जिसकी वज़ह से यह क़ायनात
ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ
ममता, करुणा, स्नेह,
वात्सल्य और इन्सानियत
जो किसी भी मज़हब, धन दौलत
लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

अनुक्रम

प्रेम की मौत	11
ऐसा क्यों	18
बेबस जनता	21
समझदार सरकार	23
ईश्वर से व्यापार	27
भक्त की दुविधा	29
बेटे से गुज़ारिश	31
वसुदैव कुटुम्बकम्	38
हैवान और दरिन्दे बेटे	42
अन्ध विश्वास	46
दुश्मन क्यों	49
शायरी के जज़्बात	56
कैसा नया साल	62
इन्सान से बेहतर जानवर	68
अंगों से सीख	83
वक़्त ने क्या क्या देखा है	91

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्क़ारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

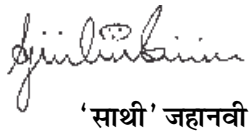

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

प्रेम की मौत

प्रेम किसी रिश्ते को नहीं मानता
मगर बिना प्रेम के तो
कोई रिश्ता होता भी तो नहीं
एक इन्सान के इस ज़माने में
प्रेम के इतने सारे
रिश्ते होने के बावजूद भी
ज़माने में हर रोज प्रेम का रिश्ता
हर तरह से जख़्मी होकर
वक़्त बेवक़्त बेमौत मरता है

पिता-पुत्र

असहाय बुजुर्ग माता-पिता
दर-दर की ठोकरें खाते हैं
या फिर वृद्धाश्रम में
या फिर यातीमों की तरह से
गुज़र बसर करते हैं
या फिर फुटपाथ पर
भिखारी बनकर भीख माँगते हैं
तब भी तो पिता पुत्र के
ज़िम्मेदार प्रेम का रिश्ता
तार-तार हो कर मरता है

पति-पत्नी

परिवार में लड़ाई झगड़ों से
हैरान और परेशान हो कर

तलाकशुदा का नर्क जैसा
जीवन जीते हैं तो पति-पत्नी में
आपसी प्रेम और विश्वास का रिश्ता
रोज-रोज बेआबरू होकर मरता है

भाई-भाई

ना कुछ छोटी सी बात पर
जब भाई-भाई एक दूसरे के
ख़ून के प्यासे हो जाते हैं तो
भाईचारे में प्रेम का रिश्ता
शर्म से पानी पानी होकर
दूध और ख़ून का अमर रिश्ता
अकाल मौत भी तो मरता है

पड़ौसी की मौत

ना कुछ छोटी सी बात पर
आपस में कहासुनी को लेकर
ईर्ष्या, रंजिश और नफ़रत की
आग में जल-जलकर
एक पड़ौसी का प्रेम भी तो
ख़ुदग़र्ज़ी के ख़न्ज़र से
बिना वज़ह घायल होकर मरता है

मन की मौत

अपनी इच्छा और ख़ुशी के विपरीत
औरों के लिये बेमन से जी कर
अपने अन्दर का प्रेम भी तो

जज़्बातों, तमन्नाओं और
अहसास का गला घोंट कर
अक़्सर बेमौत मरता है

दोस्ती की मौत

आपस में दुख और सुख में
सहयोग और ज़रूरत का रिश्ता
विश्वास के ख़न्ज़र से जख़्मी होकर
दोस्ती का प्रेम भी तो
अक़्सर बेमौत मरता है

प्यार की मौत

रस्मों और रिवाज़ों के
बेरहम और ज़ालिम बन्धनों से
बेबस और बेक़रार होकर
लाचारी और मज़बूरी में
जब प्यार करने वाले प्रेमी
तड़प-तड़पकर जुदा होते हैं
तब भी तो प्रेम मरता है
फाँसी के फन्दे पर लटक कर

शहीद की मौत

अपने वतन के लिये
जान कुर्बान कर के
अभावों में घुट-घुटकर जी कर
शहीदों का देश प्रेम भी तो
जलालत और तौहीन से मरता है

शजर की मौत

हरा भरा शजर बनने के लिये
बीज बनकर ज़मीन में गढ़ गया
प्राणवायु, छाया व फल देने के लिये,
मगर लालची ख़ुदग़र्ज़ इन्सान ने
अपनी नाज़ायज़ ख़्वाहिशों और
अरमानों को पूरा करने के लिये
हरे भरे शजर को काटकर
जब बेमौत मार दिया जाता है
तब भी तो हसीन कायनात में
शजर की प्रकृति का प्रेम मरता है

बेटी की मौत

कभी कोख में ही मारकर
तो कभी बेटों को
ज़्यादा अहमियत देकर
बेटी की ख़ुशियों और जज़्बातों का
बेरहमी से गला घोंट कर
जब मार दिया जाता है
तब भी तो बेटी का प्रेम मरता है
ममता और मानवता को शर्मसार करके

नदी की मौत

तन मन की प्यास को बुझाकर
चारों तरफ हरियाली और ख़ुशहाली से
जल ही जीवन है की हक़ीक़त बताकर
जब नदिया के पवित्र जल में
कूड़ा कचरा डलता है तो

दरिया का निर्मल प्रेम भी तो
गन्दा नाला बनकर मरता है

ज़मीन की मौत

माँ की ममता की तरह से
हमें इतना सब कुछ देती है,
कायनात के हर जीव-जन्तु को
पोष्टिक भोजन देकर पालती है
प्रकृति को हर तरह से
सुख समृद्धि से सन्तुलित करती है
जब तरह-तरह के अत्यधिक दौहन से
बेरहम अत्याचार होते हैं तो
तब भी तो धरती माँ का प्रेम
इन्सानों के अप्राकृतिक व्यवहार से
तड़प-तड़प कर मरता है

इन्सानियत की मौत

ख़ुदग़र्ज़ी, चालाकी, मक्कारी, बदनियत
छुआछूत, जातिवाद, भाई-भतीजावाद,
शरीफ इन्सानों की तौहीन व ज़लालत
ज़ालिम व सितमगर इन्सानों की
हैवान और शैतान गन्दी हरकतें
तब भी तो इन्सानियत का प्रेम
चीख-चीख कर मरता है

अस्मत की मौत

हवस के भूखे भेड़िये
बदन को नोंच-नोंचकर
जबरदस्ती से बलात्कार करते हैं तो

इज़्जत और आबरू लुटाकर
बहू-बेटियों की अस्मत का
प्रेम भी तो जख़्मी होकर मरता है

बारिश की मौत

प्रकृति के असन्तुलन से
मज़बूर,बेबस और लाचार होकर
वक़्त बेवक़्त बेमौसम बरसकर
समन्दर में बरसकर या फिर
मूसलाधार बारिश से तूफान बनकर
तो कहीं बाढ़ और सूखा पड़कर
जब पानी बेकार हो जाता है तो
तब भी तो प्राकृतिक बारिश का
निर्मल प्रेम अकाल मौत मरता है

दौलत की मौत

ग़रीबों की बीमारी का इलाज
असहाय गरीब की सहायता
ज़रूरतमन्दों की ज़ायज ज़रूरतें
भूखे और प्यासों के लिये मदद
ग़रीब बेटियों का कन्यादान
रोटी कपड़ा और मकान
ये सब दौलत के ही काम
मगर तिजौरियों में बन्द करने से
दौलत का प्रेम भी तो मरता है

मौत की मौत

अपने कर्मों की सजा भुगतकर
लाइलाज बीमारी से पीड़ित होकर

बिस्तर पर पड़े-पड़े सड़कर
जब मौत माँगें से भी नहीं मिलती
तब भी तो स्वाभाविक मौत का प्रेम
कौमा का जीवन जीकर मरता है

इन्साफ की मौत

सरे आम जुर्म के सुबूत मिटाकर
गुनहगार को तो बरी करते हैं,
बेगुनाही के सबूत होते हुए भी
बेगुनाह को संगीन सजा देते हैं
तब भी तो अदालतों में
झूठी गवाही के सबूतों से
इन्साफ़ का प्रेम भी तो मरता है

ईश्वर की मौत

ईश्वर के दर पर हर कोई
प्रार्थना करने के लिये आता है तो
दिलो दिमाग़ में कुछ पाने की
उम्मीदें और मन्नतें लेकर आता है
जबकि ईश्वर को पता है कि
उसे उसके कर्मों के मुताबिक
किसको क्या-क्या देना है
या फिर जब मन्दिर मस्जिद में
चोरी, हत्या और बलात्कार होते हैं
या फिर मन्दिर और मस्जिद
आंतकवादियों के पनाहगार बनते हैं
तब भी तो ईश्वर का प्रेम मरता है।

ऐसा क्यों

हम हमारे माता-पिता की
संस्कारवान सन्तानें हैं
हम दोनों पति-पत्नी
दु:ख-सुख में जीवन साथी हैं
हम सब भाई और बहन में
प्यार और विश्वास है
हमारे तन और मन में भी
बचपन की चंचलता है
हमारे भी हँसी मज़ाक करते
दोस्त और सहेलियाँ हैं
हमारा भी गली मोहल्ला
और दु:ख सुख के पड़ौसी हैं
हमारा भी ख़ुशहाल और विशाल
हर रिश्तों से आबाद ननिहाल है
हमारे और भी पारिवारिक
और सामाजिक रिश्तेदार हैं
यानि कि हर रिश्तों से
आबाद और ख़ुशहाल हमारा जीवन है

हम अनपढ़ और गरीब
छोटी जाति के हुये तो क्या हुआ
मगर हम गँवार, बदतमीज़

बुझदिल, ख़ुदग़र्ज़, देशद्रोही,
अहसान फरामोश, चोर, लालची,
भ्रष्टाचारी, मक्कार, आलसी,
हैवान और शैतान, ख़ूनी,
ईर्ष्यालू, नफ़रती, नास्तिक
और धोखेबाज़ तो नहीं
हमारे तन मन में इन्सानियत
देश प्रेम, वतन परस्ती, स्वाभिमान,
भाई चारा, प्रकृति प्रेम, संवेदना,
कर्म ही पूजा, सहनशीलता,
ज़मीर, दया और सदाचार,
मेहनत और ईमानदारी है

हमारी रगों में भी
वही लाल ख़ून बहता है
हमारे भी वैसे ही
दिल और दिमाग़ है
हमारे भी वैसे ही
दो हाथ और पैर हैं
हमारे भी वैसे ही
दो आँख और कान है
हमारे भी वैसी ही
नाक और जुबान है
हमारे भी वैसे ही
मुँह और चेहरा है
यानि कि हमारा शरीर भी
औरों के जैसा ही है

फिर हमारे साथ
ये भेदभाव,
छुआछूत, दोगलापन,
रंजिश और नफरत,
तिरस्कार, अपमान,
अन्याय और शौषण,
दुराचार और दुर्व्यवहार
के साथ अत्याचार क्यों?

बेबस जनता

यह गुज़रे ज़माने की बात हो गई है
जब सरकारें जनता का विश्वास
खो दिया करती थी तो
सरकारें बदल जाया करती थी
क्योंकि जब देश की जनता में
एकता हुआ करती थी

मगर अब सरकारें
भोली जनता के विश्वास की
बिल्कुल भी चिन्ता नहीं करती
आज की तारीख में सरकारों को
जनता का कोई ख़ौफ नहीं रहता
अब स्वार्थी सरकारों ने
भोली जनता को दिशाहीन करके
अपने मतलब और स्वार्थ के लिये
इतने हिस्सों में बाँट दिया है कि
आज के ज़माने में सरकारें
अपने फ़ायदे और सुविधानुसार
नई जनता का निर्माण कर लेती है

जैसे दलित जनता, धार्मिक जनता
अल्प संख्यक जनता, पिछड़ी जनता

सवर्ण जनता, महिला जनता, युवा जनता,
आरक्षण की जनता, क्षेत्रिय जनता,
जातिवाद की जनता, ग़रीब जनता,
भूखी-प्यासी जनता, अमीर जनता,
रंग भेद की जनता, बहुभाषी जनता,
बेरोजगार जनता, उद्योगपतियों की जनता
इसलिये देश की भोली जनता
बेबस, लाचार, मज़बूर होकर
अपंग और अपाहिज होकर
जर्जर और कमज़ोर हो गई है
क्योंकि संगठन में ही शक्ति होती है

इसलिये अब देश की जनता
इस स्थिति में नहीं है कि
वह चलती सरकारों को बदल सके
इसलिये देश का लोकतंत्र ख़तरे में है
अब संवेदनहीन सरकारें मनमर्ज़ी से
बेरहम तानाशाह होती जा रही है
और सरकारें अपने स्वार्थ की रोटियाँ
भोली भाली जनता की चिता पर सेंक रही है।

समझदार सरकार

पानी

सूखी नदियों और
सूखे तालाबों के किनारे
अक़्सर एक बोर्ड लगा रहता है
जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में
यह साफ़-साफ़ लिखा रहता है
'कृपया गहरे पानी में नहीं जायें
डूबकर मर जाने का ख़तरा है'

सड़क

गड्ढों से छलनी
लहूलुहान सड़क पर
अक़्सर एक बोर्ड लगा रहता है
जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में
यह साफ़-साफ़ लिखा रहता है
'कृपया धीरे चलें
दुर्घटना हो सकती है'

कचरा

शहर और गाँव कस्बों की
जो सबसे गन्दी जगह होती है

जहाँ पर कूड़े कचरे का
ढेर लगा रहता है
वहाँ पर भी अक़्सर
एक बोर्ड लगा रहता है
जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में
यह साफ़-साफ़ लिखा रहता है
'कृपया यहाँ पर गन्दगी
और कचरा नहीं डालें
और अपने शहर को
स्वच्छ और सुन्दर बनायें'

फूल

उजड़े हुये बाग
और बग़ीचों के बाहर
अक़्सर एक बोर्ड लगा रहता है
जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में
यह साफ़-साफ़ लिखा रहता है
'फूल तोड़ना सख़्त मना है
भारी जुर्माना हो सकता है'
भले ही उन बाग-बग़ीचों में
फूलों का नामो-निशान नहीं हो

लिंग परीक्षण

जाँच परीक्षण केन्द्र के बाहर
हमेशा एक बोर्ड लगा रहता है
जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में
यह साफ़-साफ़ लिखा रहता है

'यहाँ पर लिंग का
परीक्षण नहीं किया जाता है'
मगर वहीं पर ही
मासूम बेटियों की
गर्भ में भ्रूण हत्यायें
सरे आम होती है

रिश्वत

सभी सरकारी
कार्यालयों में भी
जगह-जगह पर
यह लिखा रहता है
'रिश्वत लेना व देना
एक क़ानून अपराध है'
मगर वहाँ पर
कोई भी सामान्य काम
रिश्वत दिये बिना नहीं होता

दहेज

सरकार बरसों से
प्रचारित करके
अपने नागरिकों को
यह समझाती है
'दहेज लेना व देना
क़ानूनन एक संगीन जुर्म है'
जबकि हम सब सभ्य
और पढ़े लिखे नागरिक

दहेज लिये और दिये बिना
कोई भी शादी नहीं करते हैं

रास्ता

जिन रास्तों पर
आना-जाना मना होता है
वहाँ पर भी
एक बोर्ड लगा रहता है
जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में
यह साफ़-साफ़ लिखा रहता है
'यह आम रास्ता नहीं है'
जबकि उन रास्तों पर
पैदल भीड़ के साथ-साथ
भारी वाहन भी
आसानी से गुज़रते हैं

जल

शहर में बहुत सारे
सार्वजनिक स्थानों पर
जहाँ पर नल लगे होते हैं
हमेशा यह लिखा रहता है कि
'जल ही जीवन है
जो कि अमूल्य है
जल को व्यर्थ न बहायें'
मगर वहीं पर ही नलों से
व्यर्थ पानी बहता रहता है।

ईश्वर से व्यापार

हम सब मन्दिर-मस्जिद जाते हैं
ख़ुदग़र्ज़ी में हाथ जोड़कर
ईश्वर से फरियाद व दुआ करते हैं
और दीपक या अगरबत्ती लगाकर
अपनी ख़ुद की पाली हुई बलायें,
मुसीबतें, बद्दुआयें, बदकिस्मती,
दुख-दर्द, ग़म और परेशानियाँ
ईश्वर को सादर समर्पित कर आते हैं
और बदले में
अपनी नाज़ायज़ ख़्वाहिशें
धन-दौलत, चल-अचल सम्पत्ति
टूटते परिवार में ख़ुशियाँ
और संतान का सुख
और भी बहुत कुछ ऐसी तमन्नायें
जिसके लायक हम नहीं होते
ईश्वर से फरियाद व दुआ करते है

इस आशा और विश्वास के साथ
हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि
ईश्वर हमारे कष्टों का
निवारण ज़रूर करेंगे
ईश्वर कष्टों का

निवारण ज़रूर करते हैं
मगर उनका ही
जो सच्चे मन से कर्म करते हैं
इसलिये तो
हमारे शास्त्र कहते हैं कि
कर्महीन भक्ति में
कोई शक्ति नहीं होती

क्या ईश्वर सिर्फ़
कुछ लेने देने का ही नाम है
क्या हम ईश्वर से
मानसिक शान्ति, मोक्ष,
सद्भावना, आपसी भाईचारा,
सद्कर्म, वतन की ख़ुशहाली,
समस्त जीवों में सन्तुलन
और सद्विचार नहीं माँग सकते
जो कि हर ग़रीब और अमीर के लिये
सबसे मूल्यवान जमा पूँजी होती है।

भक्त की दुविधा

हर मन्दिर में
लिखा रहता है कि
दान को
दान पात्र में ही डालें
मगर हर आने वाले
भक्त के ऊपर
पुजारी की आशा भरी
लालची नज़रें लगी रहती है

इसलिये तो
बेचारा भक्त शर्म के मारे
भेंट को पुजारी के
हाथों में सौप देता है
और बेबस होकर सोचता है कि
भगवान कहाँ देख रहे हैं
मगर पुजारी तो प्रत्यक्ष रूप में
बुरी नज़र से देख रहा है

अगर पुजारी को
भेंट नहीं दूँगा तो
पुजारी मन से
पूजा नहीं करेगा

भक्त की श्रद्धा तो
भगवान के लिये है
पुजारी के लिये तो
भक्त एक ग्राहक है
और पूजा कर्म
पुजारी के लिये
एक व्यवसाय है

जबकि अधिकतर
मन्दिरों में पुजारी
एक निश्चित
मासिक वेतन पर नियुक्त है
फिर भी तो
बेईमान लालची पुजारी
ग़रीब और अमीर भक्त में
भेदभाव करता है
और वी.आई.पी. पूजा की
व्यवस्था करता है

वैसे भी जगत के
पालनहार भगवान को तो
कुछ भी नहीं चाहिये
भगवान तो संसार को
सब कुछ देने वाले हैं
भगवान तो सिर्फ़
भाव के भूखे हैं
उन्हें तो सिर्फ़
श्रद्धा के सुमन चाहिये।

बेटे से गुज़ारिश

तुम्हें देखने के इन्तज़ार में
बेबस बूढ़ी आँखें भी
अब पथरा गई हैं
हमारे बूढ़े
ज़र्ज़र शरीर में
अब साँसे भी
उखड़ने लगी हैं

हम दोनों ने
मेहनत मज़दूरी करके
साहूकार का
कर्ज़ भी चुका दिया है
जो तुम्हें
पढ़ाने के लिये लिया था

बिना पलास्तर के
दो कमरे भी
आधे अधूरे बना लिये है
जिसमें खिड़की और
दरवाजे लगने बाकी हैं
तुम आने की ख़बर दोगे तो
वो भी कर्ज़ लेकर लगवा लेंगे

सरकार की
आर्थिक मदद से
शौचालय भी बन गया है
ताकि बहू व बच्चों को
किसी भी तरह की
परेशानी नहीं हो

अब गाँव तक
पक्की सड़क भी बन गई है
गाँव में अब
नालियाँ भी बन गई हैं
इसलिये अब गाँव में
गन्दगी व दुर्गन्ध
और कीचड़ भी नहीं होता

सरकार ने किस्तों में
गैस का चूल्हा
और सिलेण्डर भी दे दिया है
ताकि बहू को
दो-चार दिन रहने में
किसी भी तरह की
परेशानी नहीं हो
गाँव में अब
बिजली भी आ गई है

किस्तों में
दो पंखे भी खरीद लिये हैं
ताकि बहू और बच्चों को

आराम करने और सोने में
किसी भी तरह की
परेशानी नहीं हो

गाँव में अब मोबाईल और
इन्टरनेट की सुविधा भी है
ताकि बहू और बच्चों को
वक़्त गुज़ारने में
परेशानी नहीं हो
तुम आओगे तो
पड़ौसियों से
दो-चार दिन के लिये
टी.वी. भी माँग लेंगे

गाँव के कुछ लोग
शहर में मज़दूरी करने गये थे
वो अब थोड़ी बहुत
हिन्दी में बात कर सकते हैं
गाँव के कुछ बच्चे
थोड़ा बहुत पढ़ लिख कर
आधी अधूरी
अंग्रेजी भी बोलने लगे हैं
ताकि तुम्हारे
बच्चों और बहू को
बातचीत करने में
परेशानी नहीं हो

पहले पास के कस्बे में
हाट लगता था

तभी ज़रूरत की कुछ वस्तुयें
सप्ताह में एक बार
खरीद पाते थे
अब गाँव में ही
कुछ दुकानें खुल गई हैं
जिसमें सुख और सुविधा की
सभी वस्तुयें मिल जाती हैं
कोल्ड ड्रिंक्स, वेपर्स व
चॉकलेट भी मिलती है
इसलिये तुम्हारे बच्चों को
खाने पीने में
असुविधा नहीं होगी

गाँव में अब लोग
धोती और कुर्ते के बजाय
अब पेन्ट और शर्ट पहनने लगे हैं
जो गाँव के गँवार जैसे नहीं
शहर के लोगों की तरह दिखते हैं

कुछ औरतें साड़ी की बजाय
सलवार कुर्ता भी पहनने लगीं हैं
अक़्सर अब लड़कियाँ भी
जिन्स और टॉपर पहनने लगीं हैं
इस लिये बहू और बच्चों को
गाँव शहर जैसा ही लगेगा

शाम के वक़्त
अब गाँव के लोग

मौहल्ले के चबूतरे पर बैठकर
एक-दूसरे के
दुख और दर्द की
चिन्ता और चर्चा नहीं करते
अब फेसबुक और वॉट्सअप
चलाने में व्यस्त रहते हैं

अपनों की बजाय
दूर दराज के गैरों से
मधुर सम्बन्ध रखते हैं
और अपने आप को आधुनिक
और पढ़ा लिखा समझते हैं
इसलिये गाँव भी अब
शहर जैसा ही हो गया है
इसलिये तुम्हें एक दो दिन
रहने में कोई परेशानी नहीं होगी

हमने बूढ़ी बेबस आँखों में
तुम्हारे लिये
कैसे-कैसे सपने देखे थे
हमने तुम्हारे ऊपर
भरोसा कर के
कैसी-कैसी
उम्मीदें लगाई थी
कि तुम हमारे
बदहाल बुढ़ापे में
जायज़ ज़रूरतों का
सहारा बनोगे

तुम हमारी उम्मीदों पर
किसी भी रूप में
खरे नहीं उतरे
इसका भी हमें
कोई अफ़सोस नहीं है
हमने हमारी सभी
बहन-बेटियों और रिश्तेदारों की
सामाजिक और पारिवारिक
जिम्मेदारियाँ भी
मेहनत और मज़दूरी कर के
ख़ून पसीने की कमाई से
रूखी सूखी रोटी खा कर
यथा योग्य पूरी कर दी है

बुढ़ापे के लिये
ग्राम पंचायत में
निर्धन और असहाय
मज़बूर बुजुर्गों की
वृद्धावस्था पेंशन का आवेदन
ग्राम सेवक को
ऊपर का खर्चा
देकर कर दिया है

तुम इस बात की
बिल्कुल भी
चिन्ता मत करना कि
हम तुम से
किसी प्रकार की
रुपये पैसे की मदद माँगेंगे

हमारे असहाय
प्राण पखेरू
कब उड़ जायें
पता नहीं
हमारी अन्तिम ईच्छा
पूरी करने के लिये
एक दो घन्टे के
लिये ही आ जाओ

बरसों से तुम्हें
देखने के लिये
हम बहुत
आतुर और व्याकुल हैं
तुम्हारे आने की उम्मीद में
तुम्हारे असहाय, बेबस,
लाचार और मज़बूर
बूढ़े माता पिता।

वसुदैव कुटुम्बकम्

मैं सारी कायनात को
गले लगाना चाहता हूँ
क्योंकि
यह सारी की सारी दुनिया
मुझे बेहद हसीन और
ख़ूबसूरत लगती है,
मगर मुझे
यह अच्छी तरह मालूम है कि
मेरी बाँहें
इतनी विशाल नहीं है कि
मैं सारे संसार को
प्यार से गले लगा सकूँ,
इसलिये संसार के
हर एक उस इन्सान से
प्यार और शराफ़त से
गले मिलता हूँ
जिससे भी
गले मिल सकता हूँ

जिससे भी
गले नहीं मिल सकता
उसे इन्सानियत

और प्यार से निहारता हूँ
ऐसा नहीं है कि
मुझे सिर्फ़
इन्सानों से ही
प्यार और हमदर्दी है
मैं तो पशु और पक्षियों से भी
बेहद और बेशुमार प्यार करता हूँ
क्योंकि पशु और पक्षी
इन्सानी जुबान से
अन्ज़ान और बेख़बर होते हैं
मगर क़ुदरत के बेहद करीब होते हैं

मैं तो हिंसक जानवरों से भी
बेहद और बेहिसाब प्यार करता हूँ
क्योंकि हिंसक होना उनकी प्रवृत्ति है
जिनकी प्रवृत्ति
प्रकृति के नजदीक होती है
वो ही सच्चे जीव जन्तु होते हैं
वो ही हक़ीक़त में ख़ुशगवार
और बेहद ख़ुशनसीब होते है

कायनात के
हर जर्रे-जर्रे का
अपना-अपना वजूद होता है
कायनात में उसकी अपनी
ज़रूरत और अहमियत होती है
इसलिये हर जर्रे-जर्रे को
मैं दिलो दिमाग़ से प्यार करता हूँ

बहती हुई नदिया में
जीवन की रवानी है,
खड़े शजर में
दानवीर इन्सान की कहानी है,
पहाड़ क़ुदरत की
सुन्दरता की ज़ुबानी है,
विशाल गहरे सागर में
इन्सानियत मस्तानी है,
हर मौसम की
सुबह और शाम सुहानी है
इसलिये
हसीन और ख़ूबसूरत
कायनात को
तहेदिल से गले लगाकर
तन मन से प्यार करता हूँ

सावन और बसन्त का
मौसम ख़ुशगवार है
गुलशन में महकते हुये
गुलों की बहार है
जंगल में मंगल का
ख़ुशहाल संसार है
नील गगन में
तारे व सितारे बेशुमार है
चाँद और सूरज की
महिमा अपरमपार है
इसलिये हसीन और ख़ूबसूरत
कायनात को गले लगाकर
तहेदिल से प्यार करता हूँ

हर एक जीव के साथ
मेरी सद्भावना है
और कायनात की
ख़ुशहाली के लिये
मेरी दिल से
हार्दिक शुभकामना है
इस ख़्वाहिश और
अहसास के साथ
'सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया'
ऐसे दिली जज़्बात के साथ
'एक सबके लिये
सब एक के लिये'
क्योंकि एक और एक
दो नहीं
एक साथ मिलकर
ग्यारह होते हैं
इसलिये मेरी दिली तमन्ना है कि
सारी की सारी यह कायनात
'वसुदैव कुटुम्बकम्' से
एक होकर रहे
इसलिये मैं
सारी कायनात को
गले लगाकर प्यार करता हूँ।

हैवान और दरिन्दे बेटे

बेटियों हम बहुत
शर्मिन्दा और शर्मसार हैं
हमने ही ऐसे नालायक़
और हैवान बेटों को
जन्म देकर और
पाल पोष कर बड़ा किया है
यह कभी तुम्हारे ऊपर
तेजाब डालकर
अपनी हैवानियत
और दरिन्दगी दिखाते हैं
कभी तुम्हारे तन मन से
छेड़ख़ानी करके
तुम्हें मानसिक रूप से
परेशान करते हैं
तो कभी तुम्हारे साथ
बलात्कार करते हैं
इस वज़ह से ही तुम
ख़ुदकुशी करती हो
हवस के इन
भूखे भेड़िये बेटों से
हम तुम्हारी इज़्जत
और आबरू को

समाज में
महफ़ूज़ नहीं रख सके
इसलिये बेटियों
हम बहुत शर्मिन्दा
और तहेदिल से शर्मसार हैं

हमें इन हैवान
और जानवर बेटों को
बेटा कहते हुये भी
बहुत शर्म आती है
समाज में
हमारा मान और सम्मान
ज़लालत से
मिट्टी में मिल जाता है
हमें अपने आपसे भी
नफ़रत होने लगती है
हमारा जीना भी
मुश्क़िल हो जाता है
हमारा ख़ुदकुशी करने को
मन करता है
इसलिये बेटियों
इन नापाक़ करतूतों के लिये
हम बेहद शर्मिन्दा और शर्मसार हैं

बेटियों तुम हमें
कभी माफ़ मत करना
हमें ऐसी बद्दुआयें देना कि
हम बेमौत कुत्ते की मौत मरें

इसलिये बेटियों
हम बहुत शर्मिन्दा
और तहेदिल से शर्मसार हैं

बेटियों हम तुम्हारे
संगीन गुनाहगार हैं
बेटों की इन नापाक़
हरक़तों के भागीदार है
अपना जुर्म
क़ुबूल करने को तैयार हैं
इसलिये तुम्हारी
मनचाही सज़ा के हक़दार हैं
इसलिये बेटियों
हम बहुत शर्मिन्दा
और तहेदिल से शर्मसार हैं

हम तुम्हें
वो सारी ख़ुशियाँ
नहीं दे सके
हम तुम्हारे ख़्वाबों
और ख़यालों को
आसमान की
उड़ान नहीं दे सके
हम तुम्हारे
मासूम बचपन को
आँगन में
महफ़ूज नहीं रख सके
इसलिये बेटियों

हम बहुत शर्मिन्दा
और तहेदिल से शर्मसार हैं

इन निर्लज और कायर
बेटों की वज़ह से
हम ख़ुदा के सामने
शर्म से पानी-पानी हैं
ऐसे हैवान, ज़ाहिल
और दरिन्दे बेटे
अगर कुत्तों की तरह
बेमौत मर भी जायें तो
हमें कोई भी अफ़सोस
और मलाल नहीं होगा।

अन्ध विश्वास

हम सभी
इस अन्ध विश्वास में
मनोकामना लेकर
मन्दिर जाते हैं,
अपनी अलायें और बलायें
अधमरे पीपल के पेड़ को
इस विश्वास से
अर्पित कर आते हैं
क्योंकि हमारा
यह सम्पूर्ण
अन्ध विश्वास
होता है कि
पवित्र पीपल के पेड़ में
ईश्वर का निवास होता है
जो हमारी
अलायें और बलायें
भगाकर दूर कर देंगे

अधमरे
पीपल के पेड़ पर
सरसों का
चिकना तेल चढ़ाकर

अधमरे
पीपल के पेड़ की
जख़्मी जड़ों को
नष्ट करके
पूरी तरह से
ख़त्म करने का
पक्का इन्तज़ाम
कर देते हैं
जबकि पवित्र
पीपल का पेड़
प्राणदायनी वायु
आक्सीजन का
सबसे अच्छा स्रोत होता है

अगर हम पवित्र
पीपल के पेड़ पर
चिकने तेल के बजाय
पानी चढ़ायें तो
पीपल का पेड़
हरा भरा हो जाये
और हमारा
प्रदूषित वातावरण
साफ़ और स्वच्छ हो जाये तो
हमारी अलायें और बलायें तो
वैसे ही दूर भाग जायें

अन्धेरी और
सुनसान रातों में

जब हवा से
पवित्र पीपल के
बड़े-बड़े पत्तों की
आवाज़ सुनाई देती है तो
हमें प्रेत आत्मायें होने का
अहसास और आभास होता है
जबकि यह
पवित्र पीपल के
बड़े-बड़े पत्तों की
आवाज़ होती है
जो सिर्फ़ हवा के
वेग को दर्शाती है

अलायें और बलायें
कुछ नहीं होती
यह हमारा सिर्फ़
वहम और भ्रम होता है
अलायें और बलायें तो
सिर्फ़ मुसीबत
और बुरे वक़्त के
केवल मात्र हालात होते हैं

हम ईश्वर में
विश्वास और श्रद्धा रखें
अन्ध विश्वास तो बिल्कुल भी नहीं
वैसे भी प्रकृति से बढ़कर
किसी भी मज़हब में
कोई भी भगवान नहीं है।

दुश्मन क्यों

वो हमारे लिये
हमारे जैसे नहीं है तो
क्या वो
हमारे लिये दुश्मन है,
हम उनके लिये
उनके जैसे
नहीं है तो,
फिर हम भी तो
उनके लिये
दुश्मन ही हुये,
इस संसार में
कोई भी इन्सान
एक दूसरे के
जैसा नहीं है
तो क्या हम सब
एक दूसरे के दुश्मन हैं

हमारे सोच विचार
अलग-अलग हो सकते हैं
हम सबका मज़हब भी
अलग-अलग हो सकता हैं
हम सबका पहनावा भी

अलग-अलग हो सकता है
हम सबका खान-पान
और रहन-सहन भी
अलग-अलग हो सकता हैं
हम सब में कुछ ग़रीब
तो कुछ अमीर भी हो सकते हैं
हम सबमें कुछ बच्चे, कुछ बूढ़े
कुछ आदमी, कुछ औरतें
और कुछ जवान भी
अलग-अलग हो सकते हैं
मगर हम सबकी
रोजमर्रा की दैनिक क्रियायें
एक जैसी ही होती हैं

जैसे हँसना और रोना
जैसे खाना और पीना
जैसे सोना और जागना
जैसे नहाना और धोना
जैसे मरना और जीना
जैसे चलना और दौड़ना
जैसे उठना और बैठना
जैसे मौत का मातम
जैसे जन्म की ख़ुशियाँ
जैसे बधाई व शुभकामनाये
जैसे दुख और दर्द सहना
जैसे अफ़सोस व मलाल करना
जैसे खुशियाँ, उत्साह और उमंग
जैसे सर्दी और गर्मी का लगना

जैसे बीमारी और इलाज
जैसे दिलों की धड़कन
जैसे रगों में बहता ख़ून
जैसे बच्चे का जन्मना
जैसे इन्सान का मरना
जैसे प्यार और मुहब्बत
जैसे रंजिश और नफ़रत
जैसे ईर्ष्या और जलन
जैसे जोश और जूनून
जैसे लड़ना और झगड़ना
जैसे बच्चों में मासूमियत
जैसे औरतों की इज्जत-आबरू
जैसे माँ की ममता का आँचल
जैसे हमारा मान व सम्मान
जैसे हमारे ख़ून का लाल होना
फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों

हम सबके रिश्तें भी
एक जैसे ही होते हैं
जैसे पति-पत्नी, भाई-बहन
भाई-भाई, माता-पिता, बेटा-बेटी,
जैसे जीजा-साली, देवर-भाभी
देवरानी-जेठानी, ननद-भौजाई
मौसा-मौसी, चाचा-चाची,
ताऊ-ताई, भान्जा-भान्जी

बेठा-बहू,मामा-मामी, नाना-नानी,
भतीजा-भतीजी, दादा-दादी,
दोस्त और रिश्तेदार
इन सब रिश्तों के
अहसास और जज़्बात भी
एक जैसे ही होते हैं
फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों

हम सबके बदन भी
एक जैसे ही होते हैं
हम सबके
दिलो दिमाग़ भी
एक जैसे ही होते हैं
हम सबके इन अंगों के
काम करने के तरीके भी
एक जैसे ही होते हैं
फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों

हम सबके लिये
ज़मीन और आसमान
चाँद-सूरज की रोशनी
तारों से अद्‌भुत आकाश

ग्रह-नक्षत्र और दिशायें
सर्दी, गर्मी, बरसात के मौसम
दिन और रात का समय
हसीन सुबह और शाम
पशु-पक्षी और जीव-जन्तु
दरिया और समन्दर का पानी
शजर की छाया और फल
गुलों की ख़ुश्बू और सुन्दरता
हवा-पानी, पहाड़ और झरने
गुलशन और जंगल की हरियाली
जब क़ुदरत ने ही
हम सबके लिये
एक ही कायनात बनाई है तो
फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों

हम सबके बच्चे
एक ही तरीके से
पैदा होते हैं
हम सबके सब
मृत शरीर को
ख़ाक में ही मिलाते हैं
चाहे ख़ाक में
मिलाने का तरीका
अलग-अलग हो सकता है
कोई जलाकर

ख़ाक में मिलाता है
तो कोई दफ़्न करके
ख़ाक में मिलाता है
फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों

हम सबके रीति और रिवाज़
अलग-अलग हो सकते हैं
मगर इन सब रीति रिवाज़ों में
संस्कार और संस्कृति की भावना
हम सबमें एक जैसी ही होती है
फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों

हम सबके ईश्वर के नाम
अलग-अलग हो सकते हैं
हम सबके पूजा व प्रार्थना,
साधना और आराधना
करने के तरीके भी
अलग-अलग हो सकते हैं
मगर हम सबके सब
सिर्फ़ एक ऊपर वाले से ही
दुआ और फ़रियाद करते हैं
मन्नतें और मनोकामना माँगते हैं

हम सबके ईश्वर को
प्राप्त करने के तरीके
एक जैसे ही होते हैं
जैसे इन्सानियत और शराफ़त,
जैसे मुहब्बत और भाईचारा
फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों

फिर हम सबके सब
एक दूसरे से
अलग-अलग होकर
एक दूसरे के दुश्मन क्यों?

शायरी के जज़्बात

मेरी यह
दिली तमन्ना
नहीं है कि
मेरी कवितायें
उच्च स्तर की हो
जिस पर बुद्धि जीवी वर्ग
चिन्तन और मनन करें
आलोचना और समालोचना करें

मेरी तो सिर्फ़
इतनी सी
गुज़ारिश और
मनोकामना है कि
मेरी शायरी
बेज़ुबान की ज़ुबान हो
ग़रीब और असहाय की
आवाज़ हो

बेक़ुसूर के लिये
बेगुनाही के सुबूत हो
मासूम बच्चों की
मासूमियत हो

निर्मल और पवित्र
ईश्वर की आराधना हो
ज़रूरतमन्द के लिये
मदद की ज़रूरत हो
रिश्तों के अहसास
और जज़्बात हो
इज्ज़त और आबरू में
शर्मो हया हो
वतन के सलामत
होने के अहसास हो
सरहदों की हिफ़ाज़त के
अहसास और जज़्बात हो
वीर शहिदों की
यादगार शहादत हो
जाँबाज सिपाहियों का
जोश और जुनून हो

मेरी यह
हसरत भी नहीं है कि
मेरी शायरी
मयार और पायेदार हो
जिस पर
इल्म और अदब
तबादला-ए-ख़यालात करके
अपने कीमती वक़्त को जाया करें

मेरी तो सिर्फ़
इतनी सी ख़्वाहिश है कि

मेरी शायरी में
क़ुदरत की हिफ़ाज़त हो
इन्सान की शराफ़त
और ईमानदारी हो
हर जीव और जन्तु का
दाना-पानी हो
हर कण-कण से
सद्भावना हो
हर जर्रे-जर्रे की
अहमियत हो
सारी कायनात की
ख़ुशहाली हो
भूखे के लिये
रोटी का निवाला हो
प्यासे के लिये
दो बूँद पानी हो
थके और हारे के
विश्राम के लिये पेड़ की
शीतल व निर्मल छाया हो
बहती नदिया की रवानी में
जीवन की जीवन्त कहानी हो
इन्सानियत में
ज़हन समन्दर हो
चाँद और सूरज की
गतिशीलता हो

मेरी यह
ख़्वाहिश भी नहीं है कि

मेरी कवितायें
उच्च स्तर की हो
जिस पर बुद्धि जीवी वर्ग
चिन्तन और मनन करें
आलोचना और समालोचना करें

मेरी तो सिर्फ़
इतनी सी गुज़ारिश
और इल्तज़ा है कि
हताश के लिये
उम्मीद की किरण हो
निराश के लिये
समस्याओं का निदान हो
हैरानी और परेशानी का समाधान हो
डूबते हुये के लिये
तिनके का सहारा हो

ज़ुल्मो सितम के लिये
इन्क़लाब हो
अपाहिज़ और यतिमों का सहारा हो
अन्याय और अत्याचार
के लिये सज़ा हो
बेबस बेगुनाह के लिये
इन्साफ़ हो
मज़बूर और मेहनतक़श
बेबस मज़दूरों के
ख़ून और पसीने के
निर्मल अहसास हो

घर और परिवार में
प्यार और एतबार हो
पड़ौसियों में
एक दूसरे से मुहब्बत हो
ईर्ष्या और रंजिश की
जगह भाईचारा हो
दोस्ती में एक दूजे का
भाईचारा और विश्वास हो
ममता और करूणा की
निर्मल पुकार हो

मेरी यह
हसरत भी नहीं है कि
मेरी शायरी
मयार और पायेदार हो
जिस पर इल्म और अदब
तबादला-ए-ख़यालात करके
अपने कीमती वक़्त को जाया करें

मेरी तो सिर्फ़
इतनी सी ख़्वाहिश है कि
फटेहाल अन्नदाता
बेबस किसान की
मज़बूर और मेहनतक़श
प्रतिकूल और बदहाल
मज़बूर परिस्थितियों में
जीवनयापन की
मेहनतक़श जीवन गाथा हो

आम आदमी के
अहसास व जज़्बात हों
कुछ कर गुज़रने की आशा में
कामयाब हौसलों की उड़ान हो
मेहनती और ईमानदार के
सच होते सपनों के
ख़्वाब और ख़यालात हो

बुजुर्गों का आशीर्वाद
और सम्मान हो
साधू सन्तों की साधना
और आराधना हो
फ़क़ीरों की इबादत
और अक़ीदत हो
कलाकार की
कला का रियाज़ हो
रोजगार में मेहनत
और ईमानदारी हो

मेरी तो सिर्फ़
इतनी सी इल्तज़ा
तमन्ना, हसरत, मनोकामना,
आरजू, मन्नत और ख़्वाहिश है कि
मेरी कविताओं और शायरी में
इन सब अहसास
और जज़्बात के सिवाय
और कुछ भी नहीं हो।

कैसा नया साल

नया साल है तो
क्या मन भी नया है
क्या मन
निर्मल और पवित्र है
क्या मन
सहज और सरल है
क्या मन में
उत्साह और उमंग है
जब तक मन
नया नहीं होगा
तब तक कुछ भी
नया नहीं होगा
कुछ नया करके ही
हम कुछ
अद्‌भुत कर सकते हैं
क्योंकि सारा खेल मन का ही है

नया साल आने से
हमारा क्या बदल जायेगा
क्या हमारी बेकार व बुरी
गंदी आदतें छूट जायेंगी
क्या हमारी किसी भी

दिनचर्या में
कोई भी परिर्वतन आयेगा

क्या हमारी
लॉटरी लग जायेंगी
क्या हमें कोई
खज़ाना मिल जायेगा
क्या धन और दौलत की
बेशुमार बारिश
होने लग जायेंगी
क्या हमारे
बेरोजगार बच्चों को
कोई छोटा सा
रोजगार मिल जायेगा

नया साल आने से
हमारा क्या बदल जायेगा
क्या हमारे देश से
आतंकवाद ख़त्म हो जायेगा
क्या वतन से
नौकरशाही और भ्रष्टाचार
ख़त्म हो जायेगा

क्या हमारे
दैनिक व्यापार में
काला बाज़ारी
ख़त्म हो जायेंगी
क्या अति आवश्यक

वस्तुओं का नकली चलन
ख़त्म हो जायेगा
क्या बेनामी लेन देन
बन्द हो जायेंगे
क्या टेक्स की चोरियाँ
बन्द हो जायेंगी
क्या ख़ून खराबा
बन्द हो जायेगा

नया साल आने से
हमारा क्या बदल जायेगा
क्या हमारी बहू
और बेटियों की
आबरू लुटना
बन्द हो जायेंगी
क्या हम सबके सब
इन्सानियत और भाईचारे से
मिलकर रहने लग जायेंगे

क्या हमारे
बहादुर सैनिक
शहीद होना
बन्द हो जायेंगे
क्या हमारी सरहदें
महफूज़ हो जायेंगी
क्या भोले भाले
मासूम इन्सान
बेमौत मरना

बन्द हो जायेंगे
क्या हताश
और निराश किसान
क़र्ज़ के दलदल से
मुक्त होकर
आत्म हत्या करना
बन्द कर देंगे

नया साल आने से
हमारा क्या बदल जायेगा
क्या हम
प्रकृति के अनुसार
जीवन यापन
करने लग जायेंगे
क्या हम
प्रकृति के साधनों का
बेहिसाब शोषण
और दोहन करना
बन्द कर देंगे

क्या ख़ुदग़र्ज़
दुनियादारी को
बन्द कर देंगे
क्या हमारे
बनावटी रिश्तों में
अपनापन
उत्पन्न हो जायेगा
क्या दहेज की

चिताओं पर
बेगुनाह बहू
और बेटियों का
जलना बन्द हो जायेगा

क्या ढ़ाबे पर
झूठन धोता मासूम बच्चा
दिखाई नहीं देगा
क्या हम चोरी करना
और झूठ बोलना
बन्द कर देंगे
क्या हम वाट्सअप
और फेसबुक पर
अपना बेशकीमती वक़्त
बर्बाद करना बन्द कर देंगे

नया साल आने से
हमारा क्या बदल जायेगा
क्या अपाहिज़ और ग़रीब
भीख माँगना बन्द कर देंगे
क्या ईर्ष्या और नफ़रत
दिलो दिमाग़ से
ख़त्म हो जायेंगी
क्या बेबस
और लाचार औरतों के
बदन बिकना
बन्द हो जायेंगे

क्या कलाकार बदहाली में
मर-मर कर जीना
बन्द हो जायेंगे
क्या पड़ौसी
भाईचारे और मुहब्बत से
मिल जुलकर
रहने लग जायेंगे
क्या मौक़ा परस्त इन्सान
ख़ुदग़र्ज और बेवफ़ा होना
बन्द हो जायेंगे

क्या हरे-भरे
आबाद जंगल
बेरहमी से कटना
बन्द हो जायेंगे
क्या सूखी नदियों
और तालाबों में
पीने लायक
साफ़ पानी होगा
क्या बेज़ुबान
जीव जन्तुओं का
पृथ्वी पर सन्तुलन हो जायेगा

नया साल आने से
हमारा क्या बदल जायेगा

नया साल आने से
हमारा क्या बदल जायेगा।

इन्सान से बेहतर जानवर

निरोगी

हम पशु पक्षी
कीड़े मकोड़े
साँप बिच्छु
जैसे जानवर हैं
ईश्वर ने हमें
जैसा बनाया है
हम सब के सब
प्रकृति के साथ
प्रकृति के साधनों का
उचित उपयोग करके
सारी उम्र
निरोगी रहकर
जीवन यापन करते हैं

मौत

ईश्वर द्वारा प्रदान जीवन को
ख़ुशहाली और सन्तुष्टि से जीकर
प्राकृतिक मौत को
प्राप्त होते हैं
ज़ालिम इन्सानों की तरह से
अप्राकृतिक इलाज से
मर मरकर नहीं जीते

लिंग भेद

ऐसा नहीं है कि
हम जीव जन्तुओं में
बेटियाँ पैदा नहीं होती
मगर हम हैवान
इन्सानों की तरह
उनकी गर्भ में
भ्रूण हत्यायें नहीं करते
और न ही
जन्म लेने के बाद
रहन सहन और खान पान में
किसी भी प्रकार का
भेदभाव करते है
और बेटा बेटी में
कोई भी फर्क नहीं करते

सहवास

हम जीव जन्तुओं में
बहन, बेटियाँ, मातायें
और पत्नियाँ भी होती हैं
मगर हम पशु और पक्षी
इतने शैतान नहीं होते
जितने ज़ालिम इन्सान नहीं होते हैं
हम उनके साथ छेड़खानी,
ज़बरदस्ती और
बलात्कार नहीं करते
हम सहवास भी करते हैं तो
ऋतुओं के अनुसार
उनकी सहमति से

सन्तान उत्पत्ति
प्रकृति के लिये करते हैं
इन्सानों की तरह
मौज़ मस्ती के लिये नहीं

कृत्रिम साधन

प्रकृति ने
हम जीव जन्तुओं को
जैसा शरीर
और अंग दिये हैं
हम वैसे ही
आचरण और विचरण करते हैं
हमारे पंख हैं तो
हम उड़ते हैं
इकहरा बदन है तो
हम दौड़ते हैं
विशालकाय बदन है तो
धीरे-धीरे चलते हैं
अगर हम रेंगने वाले
जीव है तो रेंगते हैं
ज़ालिम और शैतान
इन्सान की तरह
कृत्रिम साधनों,
वाहन और मशीनों का
अप्राकृतिक उपयोग नहीं करते

अपंगता

ऐसा नहीं होता है कि
हम जीव जन्तु

अपंग नहीं होते
मगर इन्सानों की तरह
बैसाखियाँ और व्हील चेयर का
प्रयोग नहीं करते
हमारे साथी और प्रकृति
हम अपंगों को
जैसा रखती है
हम अपंग
वैसे ही ख़ुशी से
अपना जीवन
गुज़र बसर कर लेते हैं

भोजन

हम जीव और जन्तु
खाने के लिये नहीं जीते
बल्कि जीने के लिये खाते हैं
हमें जब
जितनी भूख होती है
हम जीव जन्तु
उतना ही खाते हैं
ज़ालिम इन्सानों की तरह से
वक़्त बेवक़्त नहीं खाते
हम मौका परस्त
इन्सानों की तरह
बिना भूख के भी नहीं खाते
और न ही
नादानी और जिद में
भूख लगने पर भी नहीं खाते
स्वाद के लिये

मिर्च मसालों का
अप्राकतिक
उपयोग भी नहीं करते
और न ही
स्वाद के लिये पकाकर
प्रकृति प्रदत्त
गुणवत्ता को नष्ट करते हैं

इलाज

ऐसा नहीं है कि
हम जीव जन्तु
बीमार नहीं होते
मगर हम प्रकृति प्रदत साधनों
और क्रियाओं से
ठीक हो जाते हैं
ज़ालिम इन्सानों की तरह
अप्राकृतिक इलाज नहीं करते

ख़ुदग़र्ज़ी

हम जीव और
जन्तुओं के भी
रिश्ते नाते और
परम्परायें होती हैं
मगर सितमग़र
इन्सान की तरह
ख़ुदग़र्ज़ और
दिखावटी नहीं होती

भाईचारा

हम जीव और जन्तुओं का भी
भरा पूरा परिवार होता है
मगर हम ज़ालिम
इन्सान की तरह
मतलबी दुनियादारी से
बेख़बर होकर
ख़ुदग़र्ज़ी से
कोसों दूर रहते हैं
और एक दूसरे के
साथ हिल मिलकर
इन्सानियत और
भाईचारे से रहते हैं

परिवार

हम जीव और जन्तु
संयुक्त परिवार और
समुदाय के रूप में
एक साथ इकट्ठा रहते हैं
और एक दूसरे के
दुख और दर्द में
वक़्त बेवक़्त काम आते हैं
इन्सानों की तरह नहीं कि
सिर्फ़ अपने
बीबी बच्चे ही परिवार हैं

आत्म सुरक्षा

हम जानवरों की प्रवृत्ति
हिंसक और आदमखोर

नहीं होती है
ज़ालिम इन्सान
जब हमारे क्षेत्र में
अनाधिकृत
अतिक्रमण करता है
और हमें बेघर
होने के लिये
मज़बूर और विवश
करता है तो
हमें बचाव और
आत्म सुरक्षा में
थोड़ा बहुत
हिंसक होना पड़ता है

मौसम

ऐसा नहीं है कि
हम जीव और जन्तुओं के
सर्दी, गर्मी और
बरसात के मौसम और
ऋतुयें नहीं होती
अपितु
खुले आसमान के नीचे तो
ये तीनों मौसम और ऋतुयें
ज्यादा कष्टदायक हो जाती है
मगर हम
इन्सानों की तरह
रजाई, कूलर, पंखे,ए.सी.
हीटर, गीज़र और छतरी
जैसे कृत्रिम साधनों का

हम प्रयोग नहीं करते
हमारे रहन सहन
और खान-पान के
तरीकों को बदलकर
प्रकृति के इन मौसमों को
आसानी से सहन कर लेते हैं

जीवन साथी

हम जीव जन्तुओं के
जीवन साथी भी होते हैं
हम जीवन साथी के प्रति
सारी उम्र वफादार रहते हैं
हम बेईमान इन्सान की तरह
दूसरे के जीवन साथी को
बुरी नज़र से नहीं देखते हैं
और न ही दूसरे के
जीवन साथी पर
अपना नाज़ायज़ हक़ जताते हैं

जज़्बात

हम जीव जन्तुओं के
ज़ुबान भी होती है
हमारी भाषा और
बोली भी होती है
जिससे हम जीव जन्तु
आपस में एक दूसरे से
संवाद भी करते हैं
हमारे अहसास और जज़्बातों को
एक दूसरे तक पहुँचाते हैं

रंजिश

हम जीव जन्तु
ज़ालिम इन्सान की तरह
आपस में
गाली गलोच से बात करके
एक दूसरे को अपमानित नहीं करते
और न ही
इन्सानों की तरह
ईर्ष्या और रंजिश में
बात करते हैं

शर्म

हम जीव जन्तुओं के
आँखें भी होती है
मगर हमारी आँखें
इन्सानों की तरह
बेशर्म और बुरी
नज़र की नहीं होती
हमारी आँखों में शर्म
और शराफ़त होती है

प्रकृति

हम जीव जन्तु
प्रकृति के नियमों का
पूरी तरह से पालन करते हैं
इन्सानों की तरह
कृत्रिम रोशनी करके
रात को दिन नहीं करते

विश्राम

हम जीव जन्तु दिन के
जो काम होते हैं
उनको दिन में ही करते हैं
रात्रि के अन्धेरे में
असुविधा होने की वज़ह से
पूर्ण आराम और विश्राम करते हैं
इन्सानों की तरह
अन्धेरे में छुपकर
काले कारनामे नहीं करते

इन्साफ़

हम जीव जन्तुओं के
क़ानून क़ायदे होते हैं
जिनका हम सभी जीव जन्तु
स्वेच्छा और ईमानदारी से
पूरी तरह पालन करते हैं
ताकि दूसरे
साथी जीव जन्तु को
किसी प्रकार की
परेशानी नहीं हो
हम जीव जन्तुओं के
इन्सानों की तरह से
थाने और अदालतें नहीं होती
हम जीव जन्तुओं को
सुबूत और ग़वाहों की
ज़रूरत नहीं होती
क्योंकि हम जीव जन्तु
बेगुनाह को सज़ा नहीं देते

हम जीव जन्तु
कभी जुर्म नहीं करते
और न ही
कभी जुल्म करते है
यदि कभी भूलवश
ग़लती हो भी जाती है तो
स्वयं पश्चाताप करके
क्षमा माँग लेते हैं

इन्सानियत

हम सारे के सारे
जीव और जन्तु
दिमाग़ी तौर पर
अल्प विकसित होते हैं
ज़ालिम इन्सानों की तरह से
हैवान और शैतान नहीं होते
और न ही हमारे कर्म
ऐसे होते हैं कि
हमारी वज़ह से
कोई भी परेशान हो
मगर भावनात्मक
और मानसिक रूप से
हमारे दिल और दिमाग़ में
ऐसे अहसास और
ऐसे जज़्बात होते हैं कि
ये कायनात और क़ुदरत
जीओ और जीने दो की
इन्सानियत की भावना से
ख़ुशहाली से आबाद रहे

सन्तान

हम जीव जन्तुओं के
बच्चे भी होते हैं
मगर इन्सानों के
नालायक बच्चों की तरह
उनको लाड़-प्यार में
बिगाड़ कर
उनकी नाज़ायज़ माँगें
पूरी नहीं करते
एक उम्र के बाद
खाने कमाने के लिये
अपने पैरों पर खड़ा कर
स्वतन्त्र कर देते हैं
मोह माया से ग्रसित
इन्सानों की तरह
मोह के बन्धनों में
जकड़े नहीं रखते

बुजुर्ग

हम जीव जन्तुओं के
बुजुर्ग भी होते हैं
मगर ज़ालिम
इन्सानों की तरह
असहाय बुजुर्गों को
अनाथालय में बदहाली से
जीने के लिये नहीं छोड़ते
हम उनकी पूरी मदद
और सेवा करते हैं
वक़्त पर उनको

दाना-पानी देते हैं
और उनका पूरा
मान सम्मान भी करते हैं

क़र्ज़दार

हम जीव जन्तुओं के
इन्सानों की तरह
कोई भी महँगें शौक
और खर्चे नहीं होते
इसलिये हम किसी के
क़र्ज़दार नहीं होते
इसलिये हम
बिना मानसिक तनाव के
आसानी से उपलब्ध
प्राकृतिक साधनों का
उपयोग करके
ख़ुशहाल जीवन जीते हैं

विवाद

ऐसा नहीं है कि
हम जीव जन्तुओं के
घर परिवार नहीं होते
हम सभी जीव जन्तु
प्रकृति पर भरोसा करते हैं
इन्सानों की तरह
भविष्य के लिये वस्तुओं का
संग्रहण नहीं करते
इसलिये हम
जीव और जन्तुओं के

सम्पत्तियों के
विवाद भी नहीं होते

साधन

हम सभी
जीव और जन्तु
इन्सानों के मुकाबले में
दिमाग़ और शरीर से
अविकसित और कमज़ोर
अल्प साधन होते हुये भी
ख़ुशहाली और सुक़ून से
प्राकृतिक जीवन जीते हैं
क्योंकि हम
प्रकृति के अनुसार
जीवन यापन करते हैं
इन्सान इसलिये
दुखी, हताश, निराश
और परेशान रहता है
क्योंकि वह प्रकृति से
दूर होता जा रहा है

दीन-ईमान

हम जीव जन्तु
इन्सानों की तरह
चापलूस, ख़ुदग़र्ज़
मौका परस्त, बेवफ़ा
और बेईमान नहीं होते
हम एक दूसरे से
सद्भावना, सहयोग,

शराफ़त, ख़ुद्दारी, ईमानदारी
और वफ़ादारी रखते हैं

इसलिये हम
जीव और जन्तु
समुदाय, समूह और
संयुक्त परिवार में
एक साथ रहकर
ख़ुशहाल रहते हैं
ख़ुदग़र्ज़ इन्सानों की तरह
एकल परिवार में
पराये से नहीं रहते

उपयोगी मृत्यु

मरने के बाद भी
हम हर रूप में
इन्सानों के काम आते हैं
इन्सानों की तरह
जलाकर या दफ़्न करके
शरीर बेकार नहीं करते
हमारा माँस दूसरे साथी
जीव और जन्तुओं के
खाने में काम आता है
हमारी खाल से
इन्सानों के लिये
बहुउपयोगी बेशक़ीमती
वस्तुयें बनती हैं
हमारी हड्डियों का भी
कई तरह से
व्यवसायिक उपयोग होता है।

अंगों से सीख

कान

प्रकृति और ईश्वर ने
हमें दो कान दिये हैं तो
दुगुना अच्छा सुनें और समझें
अमल करें और अपने ज्ञान में
दुगनी वृद्धि करें
और सफल जीवन जियें
बुरे को एक कान से सुनकर
दूसरे कान से निकाल दें

आँख

प्रकृति और ईश्वर ने
हमें दो आँखें दी हैं तो
हम ध्यान से दुगना देखें
अच्छी तरह सोचें समझें
क्योंकि कानों सुनी
झूठी हो सकती है
आँखों देखी हुई नहीं
दो आँखें हैं तो
दुगनी हर तरह की
सुन्दरता को निहारें
आँखों में दुगनी
शर्म और शराफ़त रखें

हाथ

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें दो हाथ दिये हैं तो
दो गुनी मेहनत
और ईमानदारी से
दुगाना कमायें और खायें
दुगना पुरुषार्थ और
दान और पुण्य करें
भाग्य के बजाय
कर्म पर विश्वास करें
क्योंकि कर्म से
भाग्य भी बदल जाते हैं

पैर

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें दो पैर दिये हैं तो
हम दो गुना पैदल चलें
और अपने आपको
स्वस्थ और निरोगी रखें

नाक

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें एक नाक में
दो स्वर दिये हैं
बायाँ स्वर
शीतल वायु के लिये
दाँया स्वर

गर्म वायु के लिये
इसलिये हम
दोनों स्वर से
दुगनी और गहरी
लम्बी साँसें लें
और अपने शरीर को
सर्दी और गर्मी के
मौसम से बचाकर
सन्तुलित रखें

फेफड़े

वैसे भी हमें
ईश्वर और प्रकृति ने
निश्चित साँसें देकर
पैदा किया है
अगर हम
गहरी साँसें लेंगे तो
निश्चित ही
हमारी साँसों की
बहुत कम खपत होगी
इसलिये हम
दीर्घ आयु होकर
निरोगी जीवन प्राप्त करेंगे
वैसे भी
साँसों का खत्म होना
मौत की ही तो
निशानी होती है

जीभ

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें सिर्फ़
एक ही जीभ दी है
वो भी
बत्तीस दाँतों के पहरे में
इसलिये
बहुत सोच समझकर
कुछ भी बोलने में
और कुछ भी खाने में
बहुत कम मात्रा में
जीभ का प्रयोग करें
वैसे भी
जितना बुरा ईन्सान का
जीभ से हो सकता है
उतना नुकसान तो
कोई दुश्मन भी
नहीं कर सकता

तीर तलवार के जख़्म तो
दवा और वक़्त से
ठीक हो जाते हैं
मगर ज़ुबान से हुये जख़्म
नासूर बनकर ताउम्र रिसते है
और मानसिक रूप से हैरान,
परेशान, विचलित और
प्रताड़ित करते हैं
जुबान के जख़्मों से इन्सान

दिमाग़ी सन्तुलन खोकर
ईर्ष्या और रंजिश में जलकर
अपने आपको ख़त्म कर लेता है
ज़ुबान से निकले अपशब्द
जान लेवा और आत्मघाती
हथियार साबित होते हैं
शरीर के सभी अंगों में से
सिर्फ़ एक मात्र जीभ को ही
स्वाद का पता चलता है
इसलिये स्वाद के लिये
आवश्यकता से अधिक खाकर
पेट को कबाड़ खाना न बनायें
और शरीर के अन्य सभी
बेशक़ीमती अंगों को बेकार न करें

दिमाग़

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें एक ही दिमाग़ दिया है
जिसे हम सोच समझकर
पढ़ लिखकर बुद्धि का
इतना विकास करें कि
किसी के बहकाने से
भ्रमित होकर
अपना मानसिक
सन्तुलन ना खोयें
इसलिये दिमाग़ को
ज़्यादा काम में ले
दिमाग़ से ही

शरीर व संसार को
संचालित और नियन्त्रित
किया जाता है

मुँह

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें एक ही मुँह दिया है
अन्य अंगों की तरह से दो नहीं
इसलिये मुँह से
दुगना काम नहीं लें
ज़िन्दा रहने के लिये
जितना ज़रूरी हो
सिर्फ़ उतना ही खाये पीयें

गुप्तांग

प्रकृति और ईश्वर ने
हमें एक ही गुप्तांग दिये है
इसलिये इन अंगों का
बहुत ज्यादा सोच समझकर
सन्तान उत्पत्ति के लिये
और ज़रूरत के अनुसार
उपयोग कर ख़ुद को
स्वस्थ और प्रसन्नचित्त रखें

दिल

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें एक ही दिल दिया है

जो शरीर का महत्वपूर्ण अंग है
दिल की धड़कन के बिना
जीना मुश्क़िल ही नहीं
नामुमक़िन है
इसलिये अपने दिल को
बहुत सोच समझकर काम में लें
दिल से किये हुये काम
अच्छे हो या न हों
यक़ीनन बुरे नहीं होते
दिल से किये हुये कामों से
निश्चित ही
आत्मसंतुष्टि मिलती है
छोटी-छोटी बातों को
दिल पे लेकर
अपने ख़ुशहाल जीवन को
बेकार और बर्बाद न करें

पेट

ईश्वर और प्रकृति ने
हमें एक ही पेट दिया है
जिसमें किडनी और
लीवर की तरह
अन्य बहुत सारे
अति महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं
जिनकी देखभाल और
सुरक्षा की ज़िम्मेदारी
स्वयं की ही होती है
हम उतना ही

कमायें खायें कि
आत्म सन्तुष्टि से
पेट भर जाये
और पेट के सभी अंग
सुरक्षित रहकर
सुचारू रूप से
अपना काम करते रहें
अन्यथा सारी बीमारियाँ
पेट से ही उत्पन्न होती हैं
जैसा खाओ अन्न
वैसा होगा मन
हम प्रदूषित और
बद्दुआओं का
खाना और पीना करेंगे तो
उसके परिणाम
ज़रूर भुगतने पड़ेंगे

प्रकृति और ईश्वर ने
जैसे जैसे अंग
जितनी जितनी
मात्रा में दिये हैं
उनका वैसे ही
उतनी मात्रा में
उचित उपयोग करके
दीर्घायु और निरोगी रहकर
जीवन को ख़ुशहाल बना सकते हैं।

वक़्त ने क्या क्या देखा है

वक़्त ने
बेबस और लाचार
मज़बूर औरत के
बदन का बिकना
बेटी का पिता के द्वारा
निर्मम बलात्कार
बेटियों का फाँसी के
फन्दे पर लटकना
बेटियों का दहेज की
चिता पर जलना
होनहार व प्रतिभावान
बेटियों को
हताशा और निराशा में
परेशान होकर
बेरहम आत्म हत्या करना
शहीदों की जवान विधवा का
मज़बूर होकर
दर-दर भटकना
अनहोनी से
भरी जवानी में
सुहाग का सिन्दूर
मिटाते देखा है

वक़्त ने
बादशाहों का
गुलाम होना
चक्रवर्ती राजाओं का
रंक होना
साधन सम्पन्न
वतन का
एक हज़ार साल का
गुलाम होना
अन्नदाता का
कर्ज़ के बोझ से
मज़बूर होकर
आत्म हत्या करना
आपात काल का
तानाशाह प्रशासन
नोटबन्दी के दौरान
जनता का
हैरान और परेशान होना
मण्डल आयोग के
आरक्षण में
छात्रों का
ज़िन्दा जलना देखा है

वक़्त ने
बुद्धि जीवियों के द्वारा
भारत माता
मुर्दाबाद के नारे लगाना
ज़िम्मेदार अफ़सर और

उत्तरदायी नेताओं के द्वारा
अरबों खरबों के घोटाले
भगत सिंह और
अन्य साथियों का
उन्हत्तर दिन का उपवास
सुभाष चन्द्र बोस की
आजाद हिन्द फौज़
ज़ालिम अंग्रजों के विरूद्ध
अठारह सौ सत्तावन का
सैनिक विद्रोह
देश द्रोहियों के द्वारा
राष्ट्र-गान का अपमान देखा है

वक़्त ने
सरेआम क़त्ल
करने वालों को
अदालत से
बाइज्ज़त बरी होना
फ़र्ज़ी सुबूतों और गवाहों से
बेगुनाहों को सज़ा होना
स्वतन्त्रता सैनानियों को
काले पानी की बेरहम सज़ा
खेजड़ी वृक्ष के संरक्षण में
तीन सौ पचास
लोगों का बलिदान
सत्रह साल के मासूम
खुदीराम बोस को
फाँसी की बेरहम सज़ा

वतन के बँटवारे में
करोड़ों मासूम इन्सानों का
क़त्ले आम देखा है

वक़्त ने
जवान बेटे की मौत पर
बेबस बूढ़े माँ-बाप का
लाचार होकर
रोना और बिलखना
लावारिश मासूम बचपन को
ढ़ाबे पर देर रात तक
भूखे पेट
झूठे बर्तन धोना
अमीर बेटों के
मज़बूर माँ और बाप का
यतीम खाने में
नर्क जैसा जीवन
भूखे और प्यासे
बेबस इन्सानों को
सड़े कचरे से बीनकर
झूठन खाते देखा है

वक़्त ने
झाँसी की रानी का
बेबस और लाचार होकर
विरागंना का शहीद होना
पन्नाधाय की स्वामिभक्ति में
अपने मासूम बेटे का बेरहम क़त्ल

तक्षशिला और नालन्दा
विश्वविद्यालय में
ज्ञान और विज्ञान के
भण्डार का जलना
महान पृथ्वीराज चौहान को
पराजित मोहम्मद गौरी को
मृत्यु का क्षमा दान करते देखा है

वक़्त ने
सोमनाथ मन्दिर को
मोहम्मद गज़नवी का लूटना
लाखों मन्दिरों और
बाबरी मस्जिद का टूटना
सिकन्दर और पौरूष का
मर्यादित संवाद करना
चन्द्र शेखर आजाद को
अपनों ने ही
गोलियों से भूनते हुये देखा है

वक़्त ने
जलियाँ वाले बाग में
निहत्थे इन्सानों का नरसंहार
तानाशाह हुक़्मरानों के खौफ़ से
बेबस और लाचार का
मज़हब बदलना
रानी पद्मनी के साथ
जौहर में बेबस
हज़ारों औरतों का जलना

आजादी के लिये
देशभक्तों का
फाँसी के फन्दों पर
शहीद होना
महाराणा प्रताप की
शहादत पर
सम्राट अकबर का
आँसू बहाना
घायल स्वामिभक्त
चेतक का
नाले को कूदना
गुरू गोविन्द सिंह के
बेटों का दीवार में
ज़िन्दा चुनना देखा है

वक़्त ने
विश्व विजेता
सिकन्दर का
दुनिया से
खाली हाथ जाना
औरंगजेब के
सख़्त पहरे से
चतुर शिवाजी का
आज़ाद होना
सम्राट राहुल का
मोहमाया से
मुक्त होकर बुद्ध होना
विश्व विजेता अशोक का

विरक्ति में सन्यासी होना
भीमराव अम्बेडकर के
नेतृत्व में पाँच लाख लोगों का
बौद्ध धर्म स्वीकारना
शेरों से बालक भरत का खेलना
सत्यवादी राजा
हरीश चन्द्र को
चाण्डाल का
नीच कर्म करते देखा है

वक़्त ने
ऋषि दधिची को
देवताओं के
अस्त्र और शस्त्र के लिये
अपनी हड्डियों का दान करना
परम पिता
परमेश्वर ब्रह्मा का
प्रकृति व हर जीव के
सन्तुलन में
सृष्टि का निर्माण करना
विश्व के सबसे बड़े
धार्मिक कुंभ के मेले में
सभी धर्मों के
विश्व के करोड़ों लोगों का
आस्था में
पवित्र स्नान करना देखा है

वक़्त ने
गंगा सागर में
मकर संक्रान्ति के दिन
शिव दर्शन के लिये
सागर का रास्ता देना
परशुराम के द्वारा
घरती को इक्कीस बार
क्षत्रिय विहीन करना
अग्नि में न जलने का
वरदान प्राप्त होलीका को
अग्नि में जलते देखा है

वक़्त ने
विष्णु को
मोहिनी रूप धर कर
देवताओं को
अमृतपान कराना
विष्णु को
ठिगने ब्राह्मण के रूप में
तीन पगों में
तीन लोकों को नापना
अधर्मी हिरण्यकश्यप की
मृत्यु के लिये अद्‌भुत
नृसिंह अवतार में देखा है

वक़्त ने
शिव का सदियों तक
बेलगाम योग साधना करना

पार्वती की विरह वेदना में
शिव का ताण्डव नृत्य करना
गणेश के कटे धड़ पर
हाथी के सर को
प्रत्यारोपित करना
गंगा के प्रचड़ वेग को
शिव की जटा में समाना
सृष्टि की सुरक्षा में
शिव का विष पान करना
शिव की साधना को भंग कर
कामदेव को भस्म होते देखा है

वक़्त ने
राधा और कृष्ण के
निर्मल और पवित्र प्रेम में
मिलन का साकार होना
कृष्ण लीला में
कालिया नाग का दहन
अनामिका अँगुली में
गोवर्धन पर्वत को उठाना
बाल्यावस्था में
पूतना व कंस का वध
युद्ध क्षेत्र में
हताश अर्जुन को
गीता में कर्म का उपदेश
बिना अस्त्र और शस्त्र के
महाभारत का युद्ध जीतना
अहेरी के विष युक्त बाण से

महायोगेश्वर कृष्ण की मृत्यु
मित्र सुदामा को
तीन मुट्ठी चावल में
तीन लोक का
राज्य देते देखा है

वक़्त ने
महाभारत में
अपनों से
अपनों का मरना
पिता की
नाज़ायज़ इच्छा के लिये
भीष्म की ब्रह्मचारी प्रतिज्ञा
गान्धारी की आजीवन
अन्धे रहने की प्रतिज्ञा,
शकुनी के दिमाग़ और
शतरंज के चालों की कुटिलता,
भीम में सौ हाथियों का बल,
विदुर की कुशल राजनीति,
भरी सभा में अपनों से
द्रोपदी का चीर हरण देखा है

वक़्त ने
दान वीर कर्ण का
कवच कुण्डल का दान
लाक्षागृह में पाण्ड़वों के
ज़िन्दा दहन की साजिश,
धर्मराज युधिष्ठिर का धर्म,

गुरू दक्षिणा में
एकलव्य का अगूँठा,
अर्जुन के हाथों
इच्छित मृत्यु का
वरदान प्राप्त
भीष्म का वध
छल और कपट से
निहत्थे वीर अभिमन्यु का
बेरहम वध देखा है

वक़्त ने
वेद व्यास के नियोग से
धृतराष्ट्र, पाण्डु
और विदुर का जन्म
अग्नि कुण्ड से
द्रोपदी का जन्म
सूर्य प्रार्थना से
कर्ण का जन्म
देवताओं के
स्मरण मात्र से
पाण्डु पुत्रों की
सन्तानोत्पत्ति
अठारह दिन के
विनाशकारी युद्ध में
करोड़ों सैनिकों का मरना
चक्रवर्ती पाण्ड़वों को
अज्ञातवास में

नौकर और सेवक के
भेष में देखा है

वक़्त ने
राजा राम को
चौदह वर्ष का वनवास
सीता का हरण, अग्नि परीक्षा
और ज़मीन में समाना
राम की जल समाधि
महाबलशाली रावण को
छः माह बाली की काँख में
हनुमान का सागर पार करना
सूरज को निगलना,
सोने की लंका दहन
सुरसा के मुँह से निकलना
संजीवनी पर्वत को उठाना देखा है

वक़्त ने
अंगद का बलशाली पैर
राम सेतु के निर्माण में
पत्थरों का तैरना और
गिलहरी का सहयोग
भवसागर को
पार कराने वाले राम को
नदी पार करने के लिये
साधारण केवट से याचना करना
मोहमाया से सब को
मुक्त करने वाले

राम का नागपाश के
बन्धन में जकड़ना
महाबलशाली रावण को
पक्षी जटायु से
अनैतिक और अधर्मी युद्ध करना
पुत्र लव कुश का
अपने पिता से
अश्व मेघ यज्ञ में युद्ध करना
राम की सरयू नदी में
जल समाधि
शक में सीता की
अग्नि परीक्षा को देखा है।

राम मन्दिर के 500 साल
पुराने विवाद का फैसला
कश्मीर से धारा
370 का हटना
तीन तलाक
बिल का पास होना
बिना सोचे-समझे
नागरिकता क़ानून का
विरोध करना देखा है
शिक्षा के मन्दिरों को
ख़ुदग़र्जी की नापाक
शतरंजी चालों से
ख़ूनी दंगे फसाद में
ज़ख़्मी और जलते देखा है
सरदार वल्लभ भाई पटेल की

विश्व की सबसे विशाल
प्रतिमा को बनते हुये देखा है
विश्व के सबसे अमीर इन्सान
बादशाह शाहजहाँ को
अपने ख़्वाबों की ताबीर ताजमहल,
जामा मस्जिद और लाल किले के
निर्माण में आर्थिक रूप से
बर्बाद होते हुये देखा है